अध्याय 3

परमेश्वर के द्वारा मूसा की बुलाहट (भाग 1)

अध्याय 3 और 4 में मूसा की परमेश्वर से बुलाहट है। मूसा मिद्यान के देश में अपने ससुर यित्रो की सेवा कर रहा था। होरेब पर्वत पर, परमेश्वर मूसा के सामने जलती हुई झाड़ी में प्रगट हुआ। अपने लोगों के प्रति अपनी महान अनुकम्पा के कारण, उसने मूसा से कहा कि इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाए (3:1-10)।

पहले, मूसा ने पूछा, "मैं कौन हूँ?" यह जताने के लिए कि वह यह कार्य करने में असक्षम है। परमेश्वर ने प्रत्युत्तर दिया कि वह मूसा के साथ बना रहेगा (3:11, 12)। दूसरे, मूसा ने प्रश्न किया कि जब वह लोगों के समक्ष जाए तो वह किस नाम से परमेश्वर की पहचान करवाए। परमेश्वर ने यह कह कर उत्तर दिया कि उसका नाम "मैं हूँ" है, और साथ ही कहा कि वह वही परमेश्वर है जिसकी उपासना उनके पूर्वजों ने की थी (3:13-15)। परमेश्वर ने फिर मूसा को फिर से लोगों के छुटकारे के कार्य के लिए आह्वान किया, इस भविष्यवाणी के साथ कि क्या होगा जब वह ऐसा करेगा: फ़िरौन सुनने से इनकार करेगा, परन्तु परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों के द्वारा अंततः सहमत हो जाएगा, और फिर अन्त में इस्राएली मिस्र छोड़ देंगे, अपने साथ मिस्र से उपहार ले जाएंगे (3:16-22)।

परमेश्वर के साथ मूसा का सामना (3:1-6)

[1]मूसा अपने ससुर यित्रो नाम मिद्यान के याजक की भेड़-बकरियों को चराता था; और वह उन्हें जंगल की पश्चिमी ओर होरेब नामक परमेश्वर के पर्वत के पास ले गया। [2]और परमेश्वर के दूत ने एक कटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन दिया; और उसने दृष्टि उठा कर देखा कि झाड़ी जल रही है, पर भस्म नहीं होती। [3]तब मूसा ने कहा, "मैं उधर फिरके इस बड़े आश्चर्य को देखूंगा, कि वह झाड़ी क्यों नहीं जल जाती।" [4]जब यहोवा ने देखा कि मूसा देखने को मुड़ा चला आता है, तब परमेश्वर ने झाड़ी के बीच से उसको पुकारा, "हे मूसा, हे मूसा!" मूसा ने कहा, "क्या आज्ञा।" [5]उसने कहा, "इधर पास मत आ, और अपने पांवों से जूतियों को उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है।" [6]फिर उसने कहा, "मैं तेरे पिता का परमेश्वर, और अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और

याकूब का परमेश्वर हूं।" तब मूसा ने जो परमेश्वर की ओर देखने से डरता था अपना मुँह ढाँप लिया।

आयत 1. अध्याय 3 का आरंभ होता है मिद्यान में **मूसा** की परिस्थिति के वर्णन के साथ। वह एक चरवाहे के रूप में अपने **ससुर** की सेवा कर रहा था। यहाँ उसके ससुर को **यित्रो ... मिद्यान का याजक** कहा गया है; संभवतः यित्रो को ही "रूएल" (2:18) भी कहा गया है। मूसा ने अपने लोगों तथा परिवार को मिस्र में छोड़ दिया था; वह यित्रो के परिवार का भाग बन गया था। यित्रो उसके साथ ससुर के स्थान पर पिता के समान अधिक रहा होगा।

यित्रो, या रूएल, "मिद्यान का याजक" था। वह किस रीति से और किस धर्म का याजक था? यद्यपि लेख इस बात को नहीं कहता है, एक संभावना है कि वह प्रभु का उपासक था। यह, मलिकिसिदक के वृतांत के साथ (उत्पत्ति 14:18, 19), एक और प्रमाण है कि इस्राएल के बाहर भी लोग एकमात्र सच्चे परमेश्वर में विश्वास रखते और उसकी उपासना करते थे।[1] मिद्यानी अब्राहम के वंशज थे; उनमें अब्राहम के विश्वास को मानने वाले लोग भी पाए जाते होंगे।

क्योंकि यित्रो की पहचान याजक कहकर की गई है, कुछ का मानना है कि मूसा ने इस स्त्रोत से परमेश्वर के बारे में सीखा होगा और परमेश्वर, जो "यहोवा" के नाम से भी जाना जाता था, की उपासना का आरंभ मिद्यानियों से हुआ होगा। मिस्र में रहने वाले इस्राएलियों का किसी अन्य धर्म या किसी अन्य देवता में विश्वास निर्धारित करने के लिए, बाइबल के वृतांत के यथार्थ होने को अस्वीकार करना होगा। इसके अतिरिक्त, क्योंकि मिद्यानी अब्राहम के वंशज थे (उत्पत्ति 25:1-6), वे एकमात्र सच्चे परमेश्वर के उपासक हो सकते थे, जिसमें किसी प्रकार का याजक होना - यद्यपि याजक होना अनिवार्यतः परमेश्वर द्वारा निर्धारित किया गया हो, आवश्यक नहीं है। बहुत संभव है कि इस्राएल और मिद्यान के धर्म एक ही स्त्रोत; अब्राहम के विश्वास से आए थे।

मूसा **भेड़-बकरियों को चराता ... होरेब नामक परमेश्वर के पर्वत के पास ले गया**। प्रत्यक्षतः इस पर्वत को दोनों, होरेब और सीनै कहा जाता था।[2] परमेश्वर का प्रावधान इस बात से प्रगट होता है कि वह इस्राएल को उसी स्थान पर लेकर आया जहाँ मूसा भेड़ें चराया करता था। होरेब को यहाँ "परमेश्वर का पर्वत" कहा गया है, उस घटना के संदर्भ में जो यहाँ घटित होने वाली थी। परमेश्वर ने इस पर्वत पर मूसा को दर्शन दिया, और बाद में इसी पर्वत पर व्यवस्था भी दी। आगे घटित होने वाली घटनाओं के संदर्भ में इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग करना पूर्वानुमानिक है।[3]

आयतें 2, 3. कहानी आगे बढ़ती है उस घटना के साथ जिसे विशिष्ट रीति से "ईशदर्शन," परमेश्वर का **प्रगट** होना कहते हैं। परमेश्वर ने **मूसा** को ऐसी **झाड़ी** में दर्शन दिए जो जल रही थी पर **आग** में **भस्म नहीं** हो रही थी। परमेश्वर का स्वरूप पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की बुलाहट का एक भाग बन गया था (यशा. 6; यिर्म. 1; यहेज. 1)। मूसा की बुलाहट में भी अन्य वृतांतों के साथ बहुत कुछ

सामान्य है, जैसे कि, गिदोन का बुलाया जाना (न्यायियों 6:11-24) और यिर्मयाह का बुलाया जाना (यिर्म. 1:4-9)। एक प्रकार से, बाद के भविष्यद्वक्ताओं को बुलाने के लिए, यह नमूना बन गया था।[4]

परमेश्वर का दूत जिसने मूसा को दर्शन दिया काफी चर्चा का विषय रहा है। पुराने नियम में उसका उल्लेख अनेकों बार आया है। यहाँ वह स्वयं परमेश्वर है; आयत 6 के अनुसार इस दूत ने कहा, "मैं तेरे पिता का परमेश्वर, और अब्राहम का परमेश्वर ..." एक स्त्रोत टिप्पणी करता है कि "परमेश्वर का दूत परमेश्वर के आधीन कोई स्वर्गीय हस्ती नहीं है परन्तु प्रभु (यहोवा) सांसारिक प्रकटीकरण में है।"[5]

जलती हुई झाड़ी निर्गमन से जुड़े आश्चर्यकर्मों में से पहला है। पुराने नियम के इतिहास में आश्चर्यकर्म सामान्य नहीं हैं। वे इस्राएल के इतिहास में कहीं-कहीं "एक समूह में" पाए जाते हैं: उदाहरण के लिए निर्गमन और कनान की विजय के समय, और एलिय्याह तथा एलीशा के सेवकाई के दिनों में। आश्चर्यकर्म इस्राएल में ऐसे संकट के समयों में हुए थे जब राष्ट्र के अस्तित्व को खतरा था। इस आश्चर्यकर्म का केन्द्र बिंदु, आग जो झाड़ी को जला तो रही थी परन्तु भस्म नहीं कर रही थी संभवतः परमेश्वर का चिन्ह या उसकी उपस्थिति का प्रकटीकरण था, क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक बहुधा आग के द्वारा हुआ है।[6]

आयत 4. जलती हुई झाड़ी में से, **परमेश्वर ने ... उसको पुकारा, कि "हे मूसा, हे मूसा!"** मूसा के नाम को एक बार के स्थान पर दो बार पुकारना संभवतः उस पल के महत्व को और उस बुलाहट के महत्वपूर्ण होने का संकेत करता है। मूसा ने उत्तर दिया, **"क्या आज्ञा,"** जो उसके परमेश्वर के कहे को सुनने का इच्छुक होने को दिखाता है। मूसा का सकारात्मक प्रत्युत्तर उसे श्रेय देता है। यह इससे पहले अब्राहम को आई परमेश्वर की बुलाहट के प्रत्युत्तर के समान (उत्पत्ति 22:1), तथा उसकी अन्य बुलाहटों के प्रत्युत्तर, जैसे कि शमूएल (1 शमूएल 3:4-8) और यशायाह (यशा. 6:8) को, के समान है।

आयत 5. परमेश्वर ने आगे कहा, कि यह **स्थान पवित्र भूमि है**। वह प्रभु के लिए किए गए किसी पूर्व पवित्रीकरण के कारण "पवित्र भूमि" नहीं थी; वह इसलिए पवित्र थी क्योंकि वहाँ प्रभु प्रकट हुआ था। एक प्रकार से परमेश्वर ने भूमि पर पवित्रता स्थानांतरित की थी - पवित्रता जो उस स्थान पर उसका कार्य हो जाने के पश्चात फिर बनी नहीं रही। परमेश्वर द्वारा मूसा को दी गई आज्ञा **अपने पांवों से जूतियों को उतार दे** उस क्षेत्र की पवित्रता पर बल देता है। किसी पवित्र स्थान में प्रवेश करने से पहले अपनी जूतियाँ उतारना एक प्राचीन प्रथा थी (देखें यहोशू 5:15)।[7]

आयत 6. परमेश्वर ने मूसा से अपना परिचय यह कहकर करवाया कि वह वही परमेश्वर है जिसकी उपासना उसके पितरों **अब्राहम**, **इसहाक** और **याकूब** ने की थी। यह इस बात पर बल देता है कि निर्गमन का वृतांत उत्पत्ति में पाए जाने वाले वृतांत का आगे का भाग है।

जब परमेश्वर ने अपना परिचय दिया, उसने कहा, **"मैं हूँ,"** जो अपने लोगों के साथ वार्तालाप आरंभ करने की उसकी सामान्य विधि है। उदाहरण के लिए, उसने

कहा, "मैं वही यहोवा हूं जो तुझे कसदियों के ऊर नगर से बाहर ले आया" (उत्पत्ति 15:7); "मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूं" (אֵל שַׁדָּי, *'एल शद्दाय*) (उत्पत्ति 35:11); "मैं तेरे पिता अब्राहम का परमेश्वर हूं" (उत्पत्ति 26:24); "मैं यहोवा, तेरे दादा अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का भी परमेश्वर हूं" (उत्पत्ति 28:13)। पुराने नियम में, परमेश्वर बहुधा अपने आप को "तेरे पितरों का परमेश्वर" या "अब्राहम [और/या इसहाक और/या याकूब] का परमेश्वर" कहकर संबोधित करता था, परन्तु उसने अब्राहम से कभी यह नहीं कहा कि वह अब्राहम के पुरखों का परमेश्वर है। नहूम एम. सारना ने ध्यान किया कि इस कारण अब्राहम और जो उससे पूर्व आए थे, उनमें एक सुस्पष्ट विच्छेद है।[8]

मूसा ने परमेश्वर की उपस्थिति को प्रतिक्रिया देते हुए **जो परमेश्वर की ओर निहारने से डरता था अपना मुंह ढांप लिया**। सारना ने स्पष्ट किया, "बाइबल में ईश्वरीय उपस्थिति से होने वाला अभिभूत तथा भयभीत करने वाले अनुभव की तीव्रता के प्रति विशिष्ट प्रतिक्रिया, गहन सदमे और भय की होती थी।"[9] पवित्रशास्त्र परमेश्वर के मुँह को देखने के खतरों के कई उदाहरण देता है (देखें उत्पत्ति 32:25, 31; निर्गमन 33:20; न्यायियों 6:22, 23; 13:22)। उसकी, जो पूर्णतः पवित्र और सर्व सामर्थी है, उपस्थिति में होने के खतरों के अतिरिक्त, वह व्यक्ति जो परमेश्वर की उपस्थिति में आता है वह अपनी महत्वहीनता और अयोग्यता का अनुभव किए बिना नहीं रह सकता। इसलिए प्रभु की उपस्थिति के प्रति सही और सामान्य प्रतिक्रिया है नम्रता और पश्चाताप का रवैया रखना। इसी मनोवृत्ति को यशायाह ने परमेश्वर के साथ हुए अपने साक्षात्कार में दिखाया था (यशा. 6:5)।

परमेश्वर के अभिप्राय (3:7-9)

[7]फिर यहोवा ने कहा, "मैं ने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं उनके दुःख को निश्चय देखा है; और उनकी जो चिल्लाहट परिश्रम कराने वालों के कारण होती है उसको भी मैं ने सुना है, और उनकी पीड़ा पर मैं ने चित्त लगाया है; [8]इसलिये अब मैं उतर आया हूं कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाऊं, और उस देश से निकाल कर एक अच्छे और बड़े देश में जिस में दूध और मधु की धारा बहती है, अर्थात कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी लोगों के स्थान में पहुंचाऊं। [9]इसलिए अब सुन, इस्राएलियों की चिल्लाहट मुझे सुनाई पड़ी है, और मिस्रियों का उन पर अन्धेर करना भी मुझे दिखाई पड़ा है।"

आयतें 7, 8. परमेश्वर ने अपने अभिप्राय स्पष्ट किए, जब उसने **मिस्र** से इस्राएल को निकाल लाने के लिए मूसा को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया। जब परमेश्वर अपने लोगों को छुड़ाने की योजना को कार्यान्वित करने लगा तब प्रत्यक्षतः परमेश्वर को प्रेरित करने वाली दो बातें थीं। एक तो सताव झेल रहे उसके लोगों के प्रति उसकी अनुकंपा। उसने कहा, "**मैं ने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं उनके दुःख को निश्चय देखा है।**" दूसरी थी लोगों को मिस्र से निकालने और उन्हें

कनान देश में लाने की उसकी लंबे समय से बनी हुई योजना (उत्पत्ति 15:13-16; 46:1-4; 48:21; 50:24, 25)। अतः, परमेश्वर का उद्देश्य था कि इस्राएलियों को **मिस्रियों के वश से छुड़ाऊं, और ... एक अच्छे और बड़े देश में जिस में दूध और मधु की धारा बहती है पहुंचाऊं।**

अभिव्यक्ति "देश में जिस में दूध और मधु की धारा बहती है" का प्रयोग देश की सम्पन्नता की ओर संकेत करने के लिए किया गया है; ये वह "भोजन थे जिनके कारण अर्ध-खानाबदोशों की दृष्टि में वह देश स्वर्ग समान प्रतीत होता था।"[10] सारना ने कहा कि यह अभिव्यक्ति लगभग बीस बार मिलती है और उस देश के उपजाऊ होने को दिखाती है; उसने बल दिया कि यह "उर्वरता का रूपक अलंकार" है।[11] उस का दृष्टिकोण था कि "मधु" (דְּבַשׁ, *देबैश)* मधुमक्खी के शहद के लिए नहीं वरन उस "मीठे शीरे के लिए था जो अंगूर के रस और विशेषकर खजूर के रस से बनता था।"[12] अन्य व्याख्या कर्ताओं का कहना है कि "मधु" वास्तव में मधुमक्खियों का शहद ही था।[13] अनेकों अन्य सन्दर्भों में देबैश केवल मधुमक्खी के शहद को ही इंगित कर सकता था (न्यायियों 14:8; 1 शमूएल 14:27; भजन 19:10; नीति. 16:24; श्रेष्ठ. 4:11; 5:1)।

उस देश को छः जाति के लोगों **कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी** का निवास-स्थान बताया गया है। इस्राएल के लिए अच्छा समाचार यह था कि वह देश उपजाऊ था; बुरा समाचार यह था कि वह देश पूर्णतः बसा हुआ था, जिसका तात्पर्य था कि इस्राएलियों को किसी-न-किसी रीति से उन लोगों से निपटना था, जब परमेश्वर उन्हें कनान में लेकर आता। सारना ने कनान में विद्यमान अत्यधिक "जाति जटिलता" पर टिप्पणी की, जो कि न केवल निर्गमन में उल्लेखित जातियों की संख्या से प्रकट होती है, वरन इससे भी कि यहोशू ने इकत्तीस राजकीय शहर-प्रान्तों पर विजय प्राप्त की (यहोशू 12)। कुछ सीमा तक यह जटिलता फिलिस्तीन की भौगोलिक विशेषताओं के कारण थी। राष्ट्रों की सूची का परमेश्वर का मूसा को दर्शन देने के वृतांत में सम्मिलित होने का "अर्थ है कि इस्राएल के लोगों का, इन बलवान तथा विघटनकारी शक्तियों को ... जिन्होंने उस भूमि को इतने अधिक विभिन्न जातीय समूहों का घर बना दिया था, चुनौती देना और उनपर विजयी होना पूर्व निश्चित था।"[14]

कनान के निवासियों के नाम इसी क्रम में 3:17 में तथा न्यायियों 3:5 में मिलते हैं। यही नाम, भिन्न क्रम में 23:23, 33:2, 34:11, और यहोशू 12:8 में भी मिलते हैं। गिनती 13:29 के अनुसार, अमालेकी नेगेव के इलाके में रहते थे, जो दक्षिण में था: हित्ती, यबूसी, और अमोरी पहाड़ी इलाकों में रहते थे; और कनानी समुद्र के तटीय इलाके तथा यर्दन के तटों पर रहते थे। आर. ऐलन कोल ने ध्यान किया कि व्यवस्थाविवरण 7:1 में सात राष्ट्रों का नाम है, जबकि उत्पत्ति 15:19-21 दस जातियों का उल्लेख करती है।[15] यह कहने के पश्चात कि ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि ये जातियां "किसी सामान्य ऐतिहासिक परम्पराओं" को साझा करती थीं, उसने उन छः लोगों का वर्णन, जिनकी सूची निर्गमन 3:8 में दी गई है, इस प्रकार से दिया:

कनानी पारिभाषिक शब्द था जिसे फिनीकी अपना वर्णन करने के लिए बहुत बाद तक प्रयोग करते रहे थे; का अर्थ "व्यापारी" हो सकता है। हित्ती का अर्थ संभवतः उत्तर के प्राचीन हित्ती साम्राज्य से आए अप्रवासी समूहों से है ... (cf. उत्पत्ति 23)। सिहोन और ओग, पूर्वी यर्दन के अर्ध-आवासी राजा *अमोरी* कहलाते हैं (गिनती 21:21); यहूदिया की पहाड़ियों के पाँच राजाओं का संगठन भी इसी नाम से जाना जाता था (यहोशू 10:5)। अपने मूल से शब्द *अमुर्रू* का अर्थ है "पश्चिमी" और इस नाम को वहाँ बसे हुए मेसोपोटामी निवासियों ने अपने पश्चिम में रहने वाले खानाबदोश पड़ोसियों को दिया था। *परिज्जी* का तात्पर्य "देहाती" हो सकता है, संभवतः जिसे अपमानजनक अर्थ के साथ प्रयोग किया जाता हो जैसे कि वर्तमान "अन्यजाति मूर्तिपूजक," परन्तु हो सकता है कि इसके प्रत्यय का उद्गम हुर्रियन से है (cf. "कन्निज्जी")। *हिव्वी* प्रतीत होता है कि होरी जाति वालों के लिए [प्रयोग किया गया] है। यदि ऐसा है तो, अर्ध-सहस्त्र शताब्दी पूर्व के हुर्रि विजेताओं का, वे यदि रक्त नहीं तो नाम तो संभाल के रख सके ... । गिब्बोनी राज्यसंघ को हिव्वी वर्णित किया गया है (यहोशू 9:7)। *यबूसियों* यबूस या यरूशलेम के मूल निवासी हैं (जिन्हें अमोरी भी कहा गया है, यहोशू 10:5)।[16]

आयत 9. इस्राएलियों की **चिल्लाहट** को परमेश्वर ने सुन लिया था, और उसने **मिस्रियों** का उन पर **अन्धेर करना देख लिया था**। यह खण्ड दोहराया गया प्रतीत होता है: आयत 7 और 9 लगभग समान हैं। आलोचक विद्वान इस दोहराए जाने में दो भिन्न स्रोतों का उपयोग देखते हैं।[17] परन्तु ये आयतें एक साहित्यिक विधि "कियाज्म" का उपयोग करती हैं, जिसमें किसी खण्ड में पाए जाने वाले समानांतर भाग ABBA नमूने में दिए जाते हैं। यह नमूना जोर देने के लिए उपयोग किया जाता है और विशेषकर नमूने के मध्य भाग के कथन की ओर ध्यान ले जाता है। इन आयतों को इस विधि के अनुसार बाँटने से निम्नलिखित ढाँचा बनता है:

A1: "मैं ने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं उनके दु:ख को निश्चय देखा है" (3:7).
  B1: "उनकी चिल्लाहट ... होती है उसको भी मैं ने सुना है, और उनकी पीड़ा पर मैं ने चित्त लगाया है" (3:7).
    C1: "इसलिये अब मैं उतर आया हूं कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाऊं" (3:8).
    C2: "[मैं आया हूँ कि उन्हें] उस देश से निकाल कर एक अच्छे ... स्थान में पहुंचाऊं" (3:8).
  B2: "इस्राएलियों की चिल्लाहट मुझे सुनाई पड़ी है" (3:9).
A2: "और मिस्रियों का उन पर अन्धेर करना भी मुझे दिखाई पड़ा है" (3:9).

कथन A2 कथन A1 के साथ जानकारी जोड़ता है: अंधेर का स्त्रोत मिस्त्री थे। B1 में ऐसी जानकारी है जो B2 में नहीं है: परमेश्वर इस्राएलियों की पीड़ा के बारे में जानता था। इसके अतिरिक्त, A और B वाले कथन C वाले कथनों की ओर

ध्यान केन्द्रित करते हैं। इसलिए इस खण्ड का केंद्रीय विचार है कि परमेश्वर इस्राएलियों को छुडाना चाहता था और उन्हें अच्छे देश में लाना चाहता था। इस ढाँचे से स्पष्ट हो जाना चाहिए कि जो दोहराया गया प्रतीत होता है - संभवत भिन्न लिखित स्रोतों पर आधारित होते हुए भी - वह वास्तव में एक गढ़ी गई साहित्यिक विधि है।

परमेश्वर की आरंभिक बुलाहट और मूसा का प्रथम प्रत्युत्तर: "मैं कौन हूँ?" (3:10-12)

10"इसलिये आ, मैं तुझे फ़िरौन के पास भेजता हूं कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए।" 11तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, "मैं कौन हूं जो फ़िरौन के पास जाऊं, और इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आऊं?" 12उसने कहा, "निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा; और इस बात का कि तेरा भेजने वाला मैं हूं, तेरे लिये यह चिह्न होगा कि जब तू उन लोगों को मिस्र से निकाल चुके तब तुम इसी पहाड़ पर परमेश्वर की उपासना करोगे।"

आयत 10. परमेश्वर ने मूसा को बुलाया कि वह **इस्राएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए**, एक ऐसा कार्य जिसके लिए उसे **फ़िरौन** के सामने जाना पड़ता। परमेश्वर ने इस्राएलियों को **मेरी प्रजा** कह कर संबोधित किया। वे इस रीति से उसके थे कि प्रारंभ में उसने अब्राहम को बुलाया फिर पितरों (अब्राहम, इसहाक, और याकूब) और उनके वंशजों (इस्राएलियों) का ध्यान रखा और उन्हें आशीष दी।

आयत 11. परमेश्वर द्वारा सौंपे गए दायित्व का मूसा ने **"मैं कौन हूँ ... ?"** प्रश्न से प्रत्युत्तर दिया। चालीस वर्ष पहले मूसा ने अपने लोगों को छुड़ाने का प्रयास किया था, परन्तु उन्होंने उसका तिरस्कार किया और वह असफल रहा। उसकी अयोग्य या असमर्थ होने की भावना सच्चे भविष्यद्वक्ताओं का गुण था।[18] बाइबल के साक्ष्य यह संकेत करते प्रतीत होते हैं कि परमेश्वर उस व्यक्ति को और अधिक भली-भांति उपयोग कर सकता है जो मानता है कि वह अयोग्य है, उसकी अपेक्षा जो अत्यधिक आत्म-विश्वासी है।

आयत 12. परमेश्वर का प्रत्युत्तर था, **"निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा।"** व्याख्या कर्ताओं के अनुसार, परमेश्वर का उत्तर, संभवतः परमेश्वर के नाम को प्रतिबिंबित करता है: "मैं रहूँगा" इब्रानी में "यह वह" के समान है[19] (देखिए 3:14 पर टिप्पणी)। मूसा के अयोग्य और असमर्थ अनुभव करने का समाधान परमेश्वर था। उसके कहने का तात्पर्य था, "मैं तेरे साथ हूँ; यदि मैं तेरी ओर हूँ, तो तुझे किसी बात की चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।" यह महत्वपूर्ण सिद्धान्त सारे पुराने नियम में सिखाया गया है और नए नियम में इसकी पुनः वृति हुई है (देखें रोमि. 8:31, 32)।

फिर परमेश्वर ने मूसा को एक **चिह्न** दिया: इस्राएल उसी पहाड़ पर **परमेश्वर की उपासना** करेगा जहाँ मूसा खड़ा था - ऐसा चिन्ह जो वास्तविक होने के बाद

ही देखा जा सकता था। परमेश्वर कह रहा था, "जब वह हो जाएगा, तब तुम जान लोगे कि यह मैंने किया है।" टेरेंस ई. फ्रेथेइम ने लिखा,

> क्या वह परमेश्वर है ... जिसने उस भेजा है? यह पहले से पूर्णतः स्पष्ट नहीं हो सकता है कि इस कार्य को करने के लिए कहने के पीछे परमेश्वर ही है। यह कि परमेश्वर ही ने उसे भेजा है मूसा को तब स्पष्ट हो जाएगा जब यह सब पूरा हो जाएगा और मूसा इस्राएल के साथ ("वह" बहुवचन है) उसी स्थान पर खड़ा होकर परमेश्वर की उपासना करेगा जहाँ वे अब खड़े हैं। इस पल में तो मूसा बस परमेश्वर के साथ होने के आश्वासन को ही जान सकता था। परन्तु जब ये घटनाएँ हो जाएँगी, तब परमेश्वर की उपस्थिति का प्रभावी होना दिखाई देगा और मूसा जान जाएगा कि इस नियुक्ति के पीछे वास्तव में परमेश्वर ही है।[20]

भविष्य में पूरे होने वाले चिन्हों के अन्य उदाहरणों में सम्मिलित हैं 1 शमूएल 2:34 और यशायाह 37:30.

मूसा का दूसरा प्रत्युत्तर: "आप कौन हैं?" (3:13-15)

[13]मूसा ने परमेश्वर से कहा, "जब मैं इस्राएलियों के पास जा कर उन से यह कहूं, 'तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है,' तब यदि वे मुझ से पूछें, 'उसका क्या नाम है?' तब मैं उन को क्या बताऊं?" [14]परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं जो हूं सो हूं।" फिर उसने कहा, "तू इस्राएलियों से यह कहना, 'जिसका नाम मैं हूं है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है'।" [15]फिर परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, "तू इस्राएलियों से यह कहना, 'तुम्हारे पितरों का परमेश्वर, अर्थात अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर, यहोवा उसी ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है। देख सदा तक मेरा नाम यही रहेगा, और पीढ़ी पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा।'"

आयत 13. यह कहा गया है कि **मूसा** का पहला प्रत्युत्तर था "मैं कौन हूँ?" और उसका दूसरा प्रत्युत्तर था "आप कौन हैं?" मूसा जानता था कि लोग उस आराध्यदेव का **नाम** पूछेंगे जिसने उसे नियुक्त किया है। कोल ने स्पष्ट किया,

> यह प्रश्न पूछना, "तुम पर परमेश्वर किस नए नाम के अन्तर्गत प्रकट हुआ?" यह पूछने के समान है, "तुम ने परमेश्वर से कौन सा नया प्रकाशन पाया है?" सामान्यतः, पितरों के दिनों में, पितरों के परमेश्वर के किसी भी नए प्रकटीकरण को उसकी एक नई संज्ञा के अन्तर्गत सहेज कर रख दिया जाता था (उत्पत्ति 16:13) जिसे फिर परमेश्वर के द्वारा बचाए जाने के कार्य के और गहन ज्ञान के लिए भविष्य में प्रयोग के लिए लिखा तथा स्मरण किया जाता था। इसलिए हम यह मान सकते हैं कि, इस प्रश्न को पूछने के द्वारा, वे पितरों के परमेश्वर की एक नई संज्ञा की अपेक्षा कर रहे थे।[21]

आयतें 14, 15. परमेश्वर ने शब्दों के अलंकारिक प्रयोग द्वारा उत्तर दिया।

इब्रानी में अस्तित्व क्रिया **मैं हूँ** (הָיָה, *हयाह)* दिव्य नाम (יהוה, *यहवह)* के समान है। क्योंकि यह नाम चार व्यंजन से बना है इसलिए इसे कभी-कभी "चतुर्भुज" भी कहा जाता है। वर्तमान विद्वान सामान्यतः इस ईश्वरीय नाम को अंग्रेज़ी में "Yahweh" (याहवे) लिप्यन्तरण करते हैं।[22] किंतु बाइबल के अधिकांशतः अंग्रजी अनुवादों में, इब्रानी शब्द यहवह का अनुवाद, छोटे आकार में छापे गए अंग्रेज़ी के बड़े अक्षरों में (प्रभु) किया जाता है। यह परम्परा, उस यहूदी प्रथा को प्रतिबिंबित करती है जिसमें जब इब्रानी लेख में यहवह आता है तो उसे "Lord" (אֲדֹנָי, *'अदोनाई)* पढ़ते हैं।

जब परमेश्वर इस शब्द को अपने नाम के लिए प्रयोग करता है, तो वह कह रहा है, "**मैं जो हूं सो हूं**।" एक अन्य संभावना है "मैं जो होऊंगा सो होऊंगा।" विद्वान कहते हैं कि इस वाक्यांश का अर्थ संकेत करता है कि परमेश्वर अस्तित्व का सार है, "अस्तित्व का आधार" है। लेकिन क्योंकि *यहवह* "अन्य पुरुष स्वरूप है और इसका अर्थ 'वह कारण बनता है' हो सकता है," इसलिए यह नाम "परमेश्वर के अनन्त अस्तित्व का नहीं वरन ऐतिहासिक प्रसंगों में परमेश्वर की उपस्थिति का संकेत करता है।"[23]

परमेश्वर ने बल देकर कहा कि वह "याहवेह" ("प्रभु") नाम से जाना जाए। इससे पूर्व वह अनेकों उपाधियों से जाना जाता था; परन्तु उसने चुना, कि इस बिंदु से आगे, वह उसके व्यक्तिगत नाम, *"याहवेह"* जो वाचा का नाम है, से जाना जाए। वास्तव में *"याहवेह"* से परमेश्वर **पीढ़ी पीढ़ी में स्मरण इसी से हुआ करेगा**। इसके लिए NRSV कहती है, "यह सदा काल के लिए मेरा नाम है, और सभी पीढ़ियों के लिए यही मेरी उपाधि है।" इसे NIV व्यक्त करती है, "सदा काल के लिए यही मेरा नाम है, जिस नाम के द्वारा मेरा स्मरण किया जाए, पीढ़ी से पीढ़ी तक।" परमेश्वर ने इस पर भी बल दिया कि वह वही परमेश्वर है जिसकी उपासना इस्राएल के पितरों: **अब्राहम**, **इसहाक**, और **याकूब** ने की थी।

छुटकारे का पूर्वालोकन (3:16-22)

16"इसलिये अब जाकर इस्राएली पुरनियों को इकट्ठा कर, और उनसे कह, 'तुम्हारे पितर अब्राहम, इसहाक, और याकूब के परमेश्वर, यहोवा ने मुझे दर्शन देकर यह कहा है कि मैं ने तुम पर और तुम से जो बर्ताव मिस्र में किया जाता है उस पर भी चित्त लगाया है; 17और मैं ने ठान लिया है कि तुम को मिस्र के दःखों में से निकालकर कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिब्बी, और यबूसी लोगों के देश में ले चलूँगा, जो ऐसा देश है कि जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं।' 18तब वे तेरी मानेंगे; और तू इस्राएली पुरनियों को संग लेकर मिस्र के राजा के पास जाकर उस से यों कहना, 'इब्रियों के परमेश्वर, यहोवा से हम लोगों की भेंट हुई है; इसलिये अब हम को तीन दिन के मार्ग पर जंगल में जाने दे कि अपने परमेश्वर यहोवा को बलिदान चढ़ाएँ।' 19मैं जानता हूँ कि मिस्र का राजा तुम को जाने न देगा, वरन् बड़े बल से दबाए जाने पर भी जाने न देगा। 20इसलिये मैं हाथ बढ़ाकर

उन सब आश्चर्यकर्मों से, जो मिस्र के बीच करूँगा, उस देश को मारूँगा; और उसके पश्चात वह तुम को जाने देगा। 21तब मैं मिस्रियों से अपनी इस प्रजा पर अनुग्रह करवाऊँगा; और जब तुम निकलोगे तब छूछे हाथ न निकलोगे। 22वरन् तुम्हारी एक-एक स्त्री अपनी-अपनी पड़ोसिन, और उनके घर में रहने वाली से सोने-चाँदी के गहने, और वस्त्र माँग लेगी, और तुम उन्हें अपने बेटों और बेटियों को पहनाना; इस प्रकार तुम मिस्रियों को लूटोगे।"

3:16-22 में कहानी का सार, और आगामी छुटकारे का एक पूर्वालोकन दिया गया है। वास्तव में, इन आयतों में पाए जाने वाले मुख्य विचारों का उपयोग करके निर्गमन 4:29-12:36 की रूप-रेखा तैयार की जा सकती है:

1. पुरनियों के लिए मूसा की प्रस्तुति (3:16, 17; तुलना करें 4:29-31)
2. फ़िरौन के सामने प्रकट होना (3:18; तुलना करें 5:1-3)
3. फ़िरौन का इनकार करना (3:19; तुलना करें 5:4-7:7)
4. परमेश्वर के आश्चर्यकर्म (30:20; तुलना करें 7:8-12:29)
5. फ़िरौन का अनुमति देना (3:20; तुलना करें 12:30-32)
6. मिस्रियों की ओर से उपहार (3:21, 22; तुलना करें 12:33-36)

आयतें 16, 17. पूर्वालोकन के आरम्भ में, परमेश्वर ने मूसा से **पुरनियों** को एकत्र करने और उनसे बातें करने के लिए कहा। पुरनिए "इस्राएल में एक प्रकार का प्रतिनिधि न्यायिक मण्डल थे।"[24] मूसा उन्हें परमेश्वर की ओर से एक संदेश प्रदान करने वाला था। इस प्रकार से, वह एक भविष्यद्वक्ता के रूप में कार्य करेगा, एक भविष्यद्वक्ता वह व्यक्ति होता है जो किसी का संदेश पहुँचाता है। परमेश्वर का उसके लोगों के प्रति संदेश इस सत्य से आरम्भ हुआ कि वह उनके और उनकी पीड़ा के विषय में **चिंता** करता था (देखें 2:24, 25; 3:7, 9)। उसकी दया के कारण, परमेश्वर ने इस्राएल को **मिस्र के उपद्रव** से छुड़ाने और उन्हें एक अन्य **देश** में ले जाने की प्रतिज्ञा की (3:7, 8 की टिप्पणियाँ देखें)।

आयत 18. इस्राएल के लोग मूसा की सुनेंगे और **राजा** से विनती करेंगे कि वह उन्हें यहोवा के लिए **बलिदान** चढ़ाने के लिए **जंगल में तीन दिन की यात्रा पर जाने दे**। हालाँकि, फ़िरौन उनकी विनती को नहीं सुनेगा। तीन दिन की यात्रा पर जाने की विनती करना क्या छल नहीं था जबकि इस्राएली वास्तव में स्थायी तौर पर मिस्र को छोड़ कर जाना चाहते थे। नहूम एम. सरना ने कहा कि उनकी विनती "फ़िरौन के हठ [हठीले मन] को मात देने की एक चाल थी।"[25]

आयत 19. फ़िरौन **दबाव में आए बिना** (וְלֹא בְיָד חֲזָקָה, *वे'लो बे याद चा ज़ाकाह*), इस्राएल को जाने नहीं देगा। KJV इस वाक्यांश "एक सामर्थी हाथ के द्वारा नहीं" का अधिक यथा शब्द अनुवाद करती है। NRSV में इसका अर्थ "जब तक सामर्थी हाथ के द्वारा विवश न किया जाए" है। मिस्री शिलालेखों में फ़िरौन की शक्ति का वर्णन करने के लिए एक बढ़ाए हुए और सामर्थी हाथ या भुजा का चित्र सामान्य बात है। समस्त निर्गमन के वर्णन में फ़िरौन के ऊपर परमेश्वर की

शक्ति का वर्णन करने के लिए इसका उपयोग किया गया है।[26] परमेश्वर ने इस्राएल को केवल छुड़ाया ही नहीं: उसने *शक्तिशाली* रूप से उन्हें छुड़ाया।

इस पूर्वालोकन ने मूसा को उसके लिए तैयार किया जो आगे था, और विशेषतः इस सत्य के लिए कि इस्राएल को स्वतन्त्र करने के लिए उसके प्रारम्भिक प्रयत्न अप्रभावी सिद्ध होंगे। इस विषय में, और अन्यों में भी मूसा की बुलाहट उसके बाद के भविष्यद्वक्ताओं के समान थी जिन्हें बताया गया था कि जिन लोगों से वे बातें करेंगे वे उनकी सुनने से इनकार करेंगे (देखें यशा. 6:9, 10)। यह कई अवसरों में से पहली बार था जब परमेश्वर मूसा को यह जानने देता है कि फ़िरौन मूल रूप से लोगों के जाने की अनुमति देने से इनकार कर देगा (देखें 4:21; 7:1-5; 10:1, 2; 11:9, 10)।

आयत 20. चूंकि मिस्र का राजा इस्राएलियों को आरम्भ में जाने नहीं देगा, तो परमेश्वर **आश्चर्यकर्म** करेगा, जिनका प्रत्यक्ष सन्दर्भ दस विपत्तियाँ है (7:14-12:30)। ये आश्चर्यकर्म मिस्रियों पर न्याय लेकर आएंगे, परन्तु ये इस्राएलियों को छुटकारा प्रदान करेंगे। विपत्तियों के परिणाम स्वरूप फ़िरौन (उन्हें) **जाने देगा**।

आयतें 21, 22. इस्राएलियों को केवल चले जाने की अनुमति ही नहीं मिलेगी, बल्कि वे अपने साथ उपहार स्वरूप अधिक से अधिक मिस्र के **खजाने-चाँदी की वस्तुएँ और सोने की वस्तुएँ, और वस्त्र ले जाएंगे**। ये वस्तुएँ इस्राएलियों के पड़ोसियों और सेवकों से प्राप्त की जाएंगी: वरन् **तुम्हारी एक-एक स्त्री अपनी-अपनी पड़ोसिन, और उनके घर में रहने वाली से सोने-चाँदी के गहने, और वस्त्र माँग लेगी** (देखें 11:2, 3; 12:35, 36)। यह भाषा सुझाव देती हैं कि इस्राएलियों के पास उनके अपने गुलाम थे, एक ऐसा सम्बन्ध जिसे बाद में मूसा की व्यवस्था के द्वारा नियंत्रित किया गया। यद्यपि परमेश्वर के लोग फ़िरौन के नियंत्रण के अधीन थे और उन्हें कठिन परिश्रम भोगना पड़ता था, फिर भी प्रत्यक्ष रूप से उनमें से कुछ समृद्ध थे। उनके पास "पशुओं और मवेशियों के झुण्ड" और "भारी संख्या में पशु थे" (12:38; देखें 9:6)। यह सत्य कि इस्राएल **मिस्रियों को लूट लेगा** मूसा के लिए अवश्य ही शुभ समाचार रहा होगा। अंत में वह उस कार्य में सफल हो जाएगा जो परमेश्वर उसे दे रहा था। आगे, परमेश्वर की अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा पूर्ण हो जाएगी जैसे ही वह मिस्र देश का न्याय करेगा और इस्राएल को "ढेर सारी सम्पत्ति" सहित बाहर निकलेगा (उत्पत्ति 15:14)।

अनुप्रयोग

परमेश्वर एक मनुष्य को कैसे तैयार करता है (अध्याय 1-4)

इस्राएल को मिस्र में बहुत सताया गया था। परमेश्वर ने उसके लोगों की पुकार को सुना और उन्हें छुड़ाने का निश्चय किया। यद्यपि छुटकारा निस्संदेह परमेश्वर का कार्य था, उसने एक मनुष्य - मूसा को उसका उद्देश्य पूरा करने के लिए इस्तेमाल किया। जो कार्य परमेश्वर पृथ्वी पर पूरा करना चाहता है, वह उन्हें मानव उपकरणों को इस्तेमाल करने के द्वारा पूरा करता है। वह ऐसा किस प्रकार करता

है? मूसा को जंगल में इस्राएल की अगुवाई करने के लिए तैयार करने की कहानी इस प्रश्न का उत्तर देने में सहायता कर सकती है। निर्गमन के पहले कुछ अध्याय यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर कैसे किसी व्यक्ति को तैयार करता है जिसके माध्यम से वह अपनी इच्छा पूरी कर सकता है।

परमेश्वर ने मूसा को चुना। इस बात में कोई संदेह नहीं कि मूसा, और उसके बाद उसी के समान यिर्मयाह को, उसके जन्म से पहले चुना गया था। यह मूसा द्वारा परमेश्वर को चुनने की आवश्यकता को किसी प्रकार कम नहीं करता (देखें इब्रा. 11:24-26)। फिर भी, मूसा एक विशेष कार्य करने के लिए जन्मा था। हमारे विषय में क्या? क्या ये संभव है कि हममें से प्रत्येक के लिए परमेश्वर के मन में एक विशेष उद्देश्य है। वह उद्देश्य क्या है? यह स्थानीय मण्डली में कोई विशेष कार्य हो सकता है। आप किसी ऐसे व्यक्ति के पास सुसमाचार लेकर पहुँच सकते हैं जिसे कोई और नहीं कर सकता; आपके पास आप एक विशेष देश या लोगों को तक सुसमाचार ले जाने की विशेष क्षमता हो सकती है। सम्भवतः ऐसी कोई सेवा हो सकती है जिसे केवल आप ही प्रदान कर सकते हैं। हम किस प्रकार यह जान सकते हैं परमेश्वर हमसे क्या करवाना चाहता है? हम तब तक यह बात नहीं जान पायेंगे कि परमेश्वर के मन में हमारे लिए क्या जब तक कि हम उसे चुनना आरम्भ न कर लें।

परमेश्वर ने मूसा को संरक्षित किया। परमेश्वर ने जिसे चुना है वह उसकी रक्षा करता है। परमेश्वर ने मूसा को एक बालक के रूप में मरने नहीं दिया, इसी कारण मूसा के माता-पिता ने उसे बचाया। जो लोग मृत्यु के निकट पहुंचे और बच गए वे पूछते हैं, "क्यों? परमेश्वर ने मुझे बचाने का चुनाव क्यों किया?" अकसर वे उत्तर देते हैं, "निश्चय ही परमेश्वर के पास मेरे लिए कोई लक्ष्य है।" हम उनसे असहमत नहीं होंगे, बल्कि उन्हें प्रोत्साहित करेंगे कि वे उस लक्ष्य को खोजने के लिए आस पास ढूँढे। हो सकता हमें स्वयं से भी यह पूछना चाहिए कि, "क्या परमेश्वर ने हम सभी को नहीं बचाया है? उसने हमें जन्म क्यों लेने दिया? उसने हमें हमारी यात्राओं में सुरक्षित क्यों रखा है?" हो सकता है ऐसा इसलिए है क्योंकि उसके पास हमारे लिए उसकी दाख की बारी में कार्य करने के लिए एक विशेष स्थान है।

परमेश्वर ने मूसा को तैयार किया। मूसा की तैयारी ईश्वरकृत थी। उसे यह नहीं पता था कि उसे किस लिए तैयार किया जा रहा था या यह कि उसे किसी कार्य के लिए तैयार किया जा रहा था। उसकी तैयारी तीन चरणों में हुई। (1) उसकी माता उसकी धाई थी। उसने उसके द्वारा अवश्य ही अब्राहम, इसहाक, और याकूब के परमेश्वर और इसकी साथ इस्राएलियों की दुहाई के विषय में सीखा होगा। उसे उसका विश्वास उसके लोगों से मिला था। (2) जितना समय उसने मिस्र में बिताया उसके माध्यम से उसे तैयार किया गया था। उस समय के कारण, वह फ़िरौन के न्यायालय में जा सकता था और उससे उसकी शर्तों के अनुसार बात कर सकता था। वह मिस्री न्यायालय, मिस्री रिवाज़ों, और मिस्री भाषा जानता था। (3) जो समय उसने जंगल में एक चरवाहे के रूप में बिताया उसे उसके माध्यम से तैयार किया गया। मिद्यान में उसने सीखा की जंगल में जीना किसके समान था, और वह

एक चरवाहे के जीवन का अभ्यस्त हो गया। मूसा ने विशेषतः उन व्यवहारों के प्रकारों को सीखा जिनकी आवश्यकता उसे जंगल में परमेश्वर के लोगों की अगुवाई के लिए थी। अस्सी वर्ष की आयु में मूसा ढीठ, आवेगशील, और (सम्भवतः) घमंडी नहीं था जैसा वह चालीस वर्ष की आयु में था; वह और बुद्धिमान था, अधिक संयमी, और सम्भवतः नम्र भी था। वह एक ऐसा अगुवा बनने के लिए तैयार था जो स्वयं से अधिक परमेश्वर पर भरोसा रखता था; वह स्वार्थहीन चरवाहा, एक सेवक अगुवा - और इस प्रकार अगुवा था जिसकी आवश्यकता इस्राएल को थी।

आपकी तैयारी के विषय में क्या? परमेश्वर आपको आपकी शिक्षा, आपकी विरासत, आपके घर के जीवन, आपके कार्य, आपके सम्बन्ध, और आपकी सफलताएँ और यहाँ तक की आपकी असफलताओं के माध्यम से तैयार कर रहा है (रोमियों 8:28)। हो सकता है परमेश्वर आपको एक विशेष कार्य के लिए तैयार कर रहा है। एक प्रचारक जिसे असाध्य कैंसर था, उसने उस सच्चाई के ऊपर विलाप करने के बजाए, कैंसर से पीड़ित अन्य लोगों के बीच सेवा करना आरम्भ कर दिया। एक मसीही जो एक शराबी और मादक पदार्थों का आदी था उसने अपने जीवन को बदला, और एक शिक्षा प्राप्त की, और उन लोगों के लिए एक परामर्शदाता बन गया जो उसी स्थिति में थे जिस पर उसने विजय प्राप्त की थी।

परमेश्वर ने मूसा को बुलाया। उसने मूसा को तब बुलाया जब उसने उससे जलती हुई झाड़ी के माध्यम से होकर बात की। हो सकता है कि उसकी बुलाहट का पहला भाग परमेश्वर की महिमा और पवित्रता की अनुभूति थी। फिर भी, मूसा परमेश्वर की बुलाहट को सुनने का इच्छुक नहीं था! उसने विरोध किया और कहा: (1) "मैं कौन हूँ?" (2) "मैं क्या कहूँगा कि किसने मुझे भेजा है?" (3) "वे मेरा विश्वास नहीं करेंगे?" (4) "मैं अच्छा वक्ता नहीं हूँ"; (5) "किसी और को भेज दे।" हालाँकि परमेश्वर उत्तर में न सुनना स्वीकार नहीं करता। उसके पास मूसा की प्रत्येक आपत्ति उत्तर था।

क्या परमेश्वर अब अभी बुलाता है? हाँ वह बुलाता है। चमत्कारी ढंग से नहीं, बल्कि ईश्वरीकृत ढंग से, परिस्थितियों के माध्यम से। परमेश्वर हमें चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करता है और इसके बाद हमारे सामने वे चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। जब हमारे हृदय उन चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाते हैं, तभी और उसी प्रकार परमेश्वर हमें बुलाता है।

क्या परमेश्वर उत्तर में न स्वीकार करता है? हाँ, वह करता है। यदि हम उसकी बुलाहट को स्वीकार न करने का चुनाव करते हैं, तो भी वह अपने उद्देश्यों को पूरा कर सकता है - परन्तु वह ऐसा हमारे माध्यम से नहीं करेगा (देखें एस्तेर 4:14)। पौलुस ने कहा, "मैं ने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली" (प्रेरितों 26:19), जिसका अर्थ है कि परमेश्वर की बुलाहट की अनाज्ञाकारिता करना सम्भव है।

परमेश्वर ने मूसा को सशक्त किया। मूसा की अनिच्छा के प्रति परमेश्वर का सबसे पहला उत्तर था कि "मैं तेरे साथ रहूँगा।" आज परमेश्वर का यही उत्तर हमारे लिए भी है (मत्ती 28:18-20)। परमेश्वर हमें कभी भी कोई कार्य उसकी करने की क्षमता के बिना नहीं देता (इफि. 3:20; फिलि. 4:13)। "जब (या जहाँ) परमेश्वर

मार्गदर्शन करता है, वहीं परमेश्वर उपलब्ध भी करता है।" जब हम परमेश्वर की इच्छा पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं, और उसकी बुलाहट का उत्तर देते हैं, तो वह हमें उसके उद्देश्य पूरा करने के लिए सशक्त करता है।

मूसा फ़िरौन के समक्ष खड़ा हुआ और उसे बताया, "परमेश्वर कहता है, 'मेरे लोगों को जाने दे!'" तो मूसा में कौन सा परिवर्तन आया था! वह इस्राएली गुलाम नहीं था जो कि वह हो सकता था यदि फ़िरौन का आदेश ने उसे नदी में डलवाया होता। वह हठी, घमंडी, मिस्री राजकुमार नहीं था जो वह मिद्यान में उसके अनुभव के द्वारा बन गया होता। वह मिस्र का भयभीत भगोड़ा नहीं था अथवा मिद्यान का कोई बदबूदार चरवाहा जो वह तब बन सकता था यदि परमेश्वर ने उसे बुलाया न होता। वह इनमें से कोई नहीं था, फिर भी वह इनमें से सब था और इससे अधिक था। वह परमेश्वर का जन था, परमेश्वर का प्रतिनिधि, परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता - फ़िरौन के समान, यहाँ तक कि उससे बड़ा - निर्भय, परमेश्वर की इच्छा के लिए तैयार, और चालीस वर्ष तक जंगल में बलवा करने वाले लोगों की अगुवाई के कष्टकारी कार्य के लिए तैयार। परमेश्वर ने उसके माध्यम से कैसे बड़े कार्य पूर्ण किए!

ऐसे ही कथन हमारे लिए भी कहे जा सकते हैं। हम चाहे कितने भी निर्धन हों, हम चाहे कितना भी अपर्याप्त अनुभव करते हों, परमेश्वर हमारे माध्यम से बड़ी-बड़ी बातों को पूरा कर सकता है। हमें निश्चय ही अपने जीवनों के लिए उसकी इच्छा की खोज करनी चाहिए और इसके बाद उसकी बुलाहट का उत्तर देने के लिए निकल पड़ना चाहिए!

महान "मैं हूँ" (अध्याय 3)

निर्गमन के लगभग सभी अध्याय परमेश्वर की विशेषताओं का प्रचार करने के लिए उपयोग किए जा सकते हैं। "महान 'मैं हूँ'" के ऊपर निर्गमन 3 का एक उपदेश परमेश्वर की निम्नलिखित विशेषताओं की ओर संकेत कर सकता है: (1) परमेश्वर "मैं हूँ" है, वह जो है, जो सदा से है, और इसके होने का कारण है। (2) परमेश्वर पवित्र है - इतना अधिक पवित्र कि उसका मुँह देखा नहीं जा सकता, इतना पवित्र कि सभी को परमेश्वर की उपस्थिति में अपने पापमय स्वभाव को पहचानना चाहिए। (3) परमेश्वर ने एक मनुष्य के साथ सम्बन्ध में होना स्वीकार किया है; वह पिताओं का परमेश्वर है। (4) परमेश्वर दयालु छुटकारा देने वाला है: भूतकाल में इस्राएल को और आज समस्त मानव जाती को।

पवित्र भूमि (3:1-6)

जब परमेश्वर मूसा के सामने प्रकट हुआ तो वह जिस भूमि पर खड़ा था वह "पवित्र भूमि" केवल इसलिए थी क्योंकि परमेश्वर उससे जुड़ा हुआ था और केवल उस समय तक जब तक परमेश्वर उससे जुड़ा हुआ था। इस पृथ्वी पर आज कोई भी भूमि "पवित्र भूमि" नहीं है। "पवित्र देश" आज उसी भाव में "पवित्र" नहीं हैं जैसा निर्गमन 3:5 में भूमि थी। हमारे संसार में "पवित्र भूमि" के सबसे निकटतम

कलीसिया है जिसके लिए मसीह मरा था। अब्राहम लिंकन, ने गेट्टीसबर्ग सम्बोधन में कहा, गेट्टीसबर्ग के युद्ध क्षेत्र में जो लोग मारे गए थे, पेन्सिल्वेनिया, ने उसे प्रतिष्ठित कर दिया (एक भाव से, "पवित्र," बना दिया)। हमें परमेश्वर से जुड़ी हुई वस्तुओं जैसे कि कलीसिया, बाइबल, आराधना और परमेश्वर के नाम को महान आदर देना सीखना चाहिए।

यीशु, महान "मैं हूँ" (3:14)

नए नियम में यीशु ने इस वाक्यांश "मैं हूँ" (देखें यूहन्ना 8:24, 58), का उपयोग स्वयं को उस परमेश्वर के रूप में दर्शाने के लिए किया जिसने स्वयं को निर्गमन 3:14 में "मैं हूँ" कहा था। परमेश्वर जो था और जो है, यीशु भी वही था और है। सुसमाचार में यीशु के उन सात "मैं हूँ" को पुराने नियम में परमेश्वर की विशेषताओं से जोड़ना सम्भव है। इस प्रकार के उपदेश का लक्ष्य यीशु के ईश्वरत्व की घोषणा करना और यह चित्रण करना है कि वह हमारी देखभाल उसी प्रकार करता है जिस प्रकार परमेश्वर ने अपने लोगों की देखभाल भूतकाल में की थी।

समाप्ति नोट्स

[1]कुछ, एकमात्र सच्चे परमेश्वर में विश्वास करने वाले प्राचीन काल के गैर-इस्राएली धार्मिक अगुवों की इस सूची में बिलाम (गिनती 22-24) को भी जोड़ते हैं। किंतु, अधिक संभावना इस बात की है कि बिलाम एक शगुन विचारने वाला था जो किसी भी देवता के नाम से, जिस से भी उसका ग्राहक उत्तर चाहता हो, बात कर लेता था। [2]निर्गमन 3:1 पर टिप्पणी, ब्रूस एम. मेट्ज़गेर और रॉलेंड ई. मर्फी, संपादक, *द न्यू ऑक्सफोर्ड एनोटेटिड बाइबल विद द ऐपोक्रिफा*, रिवाइज्ड एंड एनलार्जड (न्यू यॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रैस, 1991), 72; नहूम एम. सरना, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस: द ओरिजिन्स ऑफ बिबलिकल इस्राएल* (न्यू यॉर्क: श्कौकन बुक्स, 1996), 38. [3]उपरोक्त, 38-39. "पूर्वानुमानिक," "बात कहने की वह विधि है जिसमें भविष्य में होने वाली बात को अभी से प्रभावी मान लिया जाता है" (*द न्यू लेक्सिकॉन वेबस्टर्स ऐन्सैक्लोपीडिक डिक्शनरी ऑफ द इंगलिश लैंग्युएज*, डीलक्स संस्करण [डैनबारी, कनेक्टिकट:, लेक्सिकॉन पब्लिशर्स, 1992], 800)। [4]टेरेंस ई. फ्रेथेइम, *एक्सोडस*, इन्टरप्रेटेशन: ए बाइबल कॉमेन्ट्री फॉर टीचिंग एण्ड प्रीचिंग (लूईविल्ले: जून नौक्स प्रैस, 1991), 51. [5]उत्पत्ति 16:7 पर टिप्पणी, मेट्ज़गेर एण्ड मर्फी, 20. तुलना करें उत्पत्ति 16:13; 21:17, 19; निर्गमन 14:19. [6]सारना, 41. [7]निर्गमन 3:5 पर टिप्पणी, मेट्ज़गर एण्ड मर्फी, 72. [8]सारना, 44. [9]उपरोक्त, 45. [10]निर्गमन 3:8 पर टिप्पणी, मेट्ज़गर एण्ड मर्फी, 72.

[11]सारना, 46-47. [12]उपरोक्त, 47. [13]आर. ऐलन कोल, *एक्सोडस: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कॉमेन्ट्री,* टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलियोस: इन्टर-वर्सिटी प्रैस, 1973), 66-67. [14]सारना, 49. [15]कोल, 67. [16]उपरोक्त। [17]उदाहरण के लिए जौन ग्रे ने, आयत 7 और 8 के लिए J (यहोवा वालों) को उत्तरदायी ठहराया और आयत 9 से 15 के लिए E (इलोही वालों) को उत्तरदायी ठहराया। (जौन ग्रे, "द बुक ऑफ एक्सोडस," *द इंटरप्रेटर्स वन - वौल्यूम कॉमेन्ट्री ऑन द बाइबल* में, संपादक चार्ल्स लेमन [नैशविल्ले: ऐबिंगडन प्रैस, 1971], 34.) [18]सारना, 49. [19]कोल, 68. [20]फ्रेथेइम, 62.

[21]कोल, 69. [22]कुछ अंग्रेज़ी अनुवादों ने "टेट्राग्राम्माटौन" का लिप्यान्तरण "यहोवाह" किया है, जो पूर्व की जर्मन विद्वता को दिखाता है जिसमें अक्षर "j" और "v" को इब्रानी योद (י) और वॉव (ו) के स्थान पर प्रयोग किया गया था। वर्तमान अंग्रेज़ी विद्वता इन व्यंजनों के स्थान पर अक्षर "y" और

“w” को प्रयोग करती है। [23]निर्गमन 3:14 पर टिप्पणी, मेट्ज़गेर और मर्फी, 72. [24]सरना, 53. पुरनियों का वर्णन निर्गमन 4:29; 12:21; 17:5, 6: 18:12; 19:7; 24:1, 9, 14 में किया गया है। [25]उपरोक्त, 55. [26]जॉन एच. वाल्टन एंड विक्टर एच. मैथ्यूज़, *जेनेसिस-ड्यूट्रोनोमी*, द आईवीपी बाइबल बैकग्राउंड कमेंट्री (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रेस, 1997), 89.